Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 3 संपूर्ण क्रांति

संपूर्ण क्रांति पाठ के सारांश

'सम्पूर्ण क्रान्ति' शीर्षक अंश 5 जून 1974 के पटना के गाँधी मैदान में दिये गए जयप्रकाश नारायण के भाषण का एक अंश है .। सम्पूर्ण भाषण स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में 'जनशक्ति' पटना से प्रकाशित है। इनका भाषण सम्पूर्ण जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। भाषण के बाद लोगों के हृदय में क्रान्तिकारी विचार धधक उठे और आन्दोलन के विराट रूप धारण कर लिया। पटना के गांधी मैदान में फिर न वैसी भीड़ इकट्ठी हुई और न वैसा कोई प्रेरक भाषण हुआ।

अपने भाषण के प्रारम्भ में जयप्रकाश नारायण ने युवाओं को संकेत देते हुए कहा है कि हमें स्वराज तो मिल गया है, लेकिन सुशासन के लिए हमें अभी काफी संघर्ष करने होंगे। भाषण के क्रम में उन्होंने नेहरूजी का उदाहरण दिया। नेहरूजी कहते थे कि सुशासन के लिए देश की जनता को अभी मीलों जाना है। कठिन परिश्रम करने हैं। त्याग करने हैं। जेपी ने कहा कि अभी समाज में भूख, महँगाई, भ्रष्टाचार जैसे दानव वर्तमान हैं। उनसे हमें लड़ना होगा। आन्दोलन करना होगा। इसके लिए जनता को तैयार रहना होगा।

आन्दोलन को सफल बनाने हेतु उन्होंने युवाओं को आगे आकर नेतृत्व करने की सलाह दी। उन्होंने 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी' का आह्वान किया। लोगों के आग्रह पर उन्होंने आन्दोलन के नेतृत्व का दायित्व अपने कंधे पर ले लिया। उन्होंने जनसंघर्ष समितियों का गठन किया।

जेपी ने अपने भाषण में अमेरिका प्रवास की बात कही है। अमेरिका में वे मजदूरी कर पढ़ते थे। पढ़ाई के क्रम में वे घोर कम्युनिस्ट बन गये। जमाना लेनिन का था। अत: लेनिन के विचारों से प्रभावित थे। लेनिन के मरने के बाद वे घोर मार्क्सवादी बन गये। अमेरिका से लौटकर वे कांग्रेस में दाखिल हो गये। वे कम्युनिस्ट पार्टी में क्यों नहीं गये, इसका कारण उन्होंने देश की गुलामी माना।

जेपी आन्दोलन के क्रम में जो सभा हुई थी, उस सभा को विफल बनाने में कांग्रेस सरकार ने कौन–कौन से हथकंडे अपनाये, इसकी भी चर्चा उन्होंने अपने भाषण में की है। लोगों को ट्रेनों से उतारा गया। लाठियां चलाई गई। जेपी ने इसे लोकतंत्र पर कलंक माना। वे उनलोगों को लोकतंत्र का दुश्मन मानते हैं जो शान्तिमय कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं। वे इन्दिराजी की चर्चा करते हैं। उनके अनुसार उनकी लड़ाई किसी व्यक्ति से नहीं, बल्कि उनकी गलत नीतियों से उनके गलत सिद्धान्तों से है, उनके गलत कार्यों से है।

भाषण के क्रम में वे बापू एवं जवाहरलाल नेहरू की प्रशंसा करते हैं। वे गांधीजी का विरोध भी करते थे क्योंकि वे घोर कम्युनिस्ट जो थे। नेहरूजी को वे 'भाई' कहा करते थे। अपने भाषण में वे नेहरू की विदेश नीति के विरोध की चर्चा करते हैं। राष्ट्रीय नीति पर उनका नेहरूजी से कोई मतभेद नहीं था। भाषण के क्रम में उन्होंने दल विहीन लोकतंत्र की चर्चा की है लेकिन जेपी आन्दोलन में वे दलविहीन लोकतंत्र की घोषणा नहीं करना चाहते थे। वे जनता की भावनाओं के विरुद्ध जाना नहीं चाहते थे। भाषण के क्रम में केवल उन्होंने मार्क्सवाद की चर्चा की है। साम्यवाद एवं दलविहीन एवं राजविहीन समाज में संबंधों की चर्चा जेपी ने की।

अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि वे सम्पूर्ण क्रान्ति चाहते हैं। देश का सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक बदलाव ही सम्पूर्ण क्रान्ति है। इस सम्पूर्ण क्रान्ति को लाने में जनसंघर्ष समितियों की भूमिका की चर्चा उन्होंने अपने भाषण में की हैं। उनके अनुसार दलविहीन संघर्ष समितियाँ ही विधानसभा चुनाव में उम्मीदवार तय करेंगी। साथ ही, जन–प्रतिनिधियों पर इन संघर्ष समितियों का ही नियंत्रण होगा। जन–प्रतिनिधि निरंकुश न हों इसका ध्यान जनसमितियों को रखना होगा। ये संघर्ष समितियाँ स्थायी रूप से कार्य करेंगी। साथ ही ये समितियाँ केवल लोकतंत्र के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक क्रान्ति के लिए अथवा सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए कार्य करेंगी।

https://www.evidyarthi.in/